42HY66

पाठ 19

तेल का गिलास

माँ को अपने सभी बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं– चाहे वे बुद्धिमान हों या मूर्ख। शेखचिल्ली बहुत ही मूर्ख लड़का था। लेकिन उसकी माँ उसे बहुत प्यार करती थी। शेखचिल्ली की मूर्खता की एक कहानी इस पाठ में पढ़ेंगे।

शेखचिल्ली इस समय वही कर रहा था, जिसमें उसे सबसे ज्यादा मजा आता था। पतंगबाजी। इस समय वह अपने घर की छत पर खड़ा था और आसमान में लाल और हरी पतंगों के उड़ने का मजा ले रहा था। शेख भी कल्पना करने लगा – काश! मैं इतना छोटा होता कि पतंग पर बैठकर हवा में उड़ पाता.....

''बेटा, तुम कहाँ हो?'' तभी उसकी अम्मी ने छत की ओर देखते हुए कहा।

''बस अभी आया अम्मी,'' शेख ने कहा। अम्मी की आवाज़ से उसे दुख तो हुआ लेकिन उसने अपनी उड़ती पतंग को ज़मीन पर उतारा और फिर दौड़ता हुआ नीचे गया। शेख अपनी माँ का इकलौता बेटा था। पति की मौत के बाद शेख ही उनका एकमात्र सहारा था। इसलिए अम्मी शेख को बहुत प्यार करती थी।

''बेटा, झट से इसमें दो रुपये का सरसों का तेल ले आ,'' उन्होंने कहा और दो रुपये के नोट के साथ–साथ शेख को एक गिलास भी थमा दिया।''तेल ज़रा सावधानी से लाना और जल्दी से वापस आना। रास्ते में सपने नहीं देखने लग जाना। तुम मेरी बात सुन रहे हो न?''

''हाँ, अम्मी,'' शेख ने कहा। ''आप बिल्कुल फिक्र न करें। जब आप फिक्र करती हैं, तब आप कम सुंदर लगती हैं।''

''अच्छा, अब चापलूसी बंद करो। फटाफट बाज़ार से तेल लेकर आओ।''

शेख दौड़ता हुआ बाज़ार गया। वैसे वह आराम से बाज़ार जाता परंतु उसकी अम्मी ने उससे झटपट जाने को कहा था, इसलिए वह दौड़ रहा था।

''लाला जी, अम्मी को दो रुपये का सरसों का तेल चाहिए,'' उसने दुकानदार लाला बेनीराम से कहा। उसके बाद उसने दुकानदार को गिलास और रुपये थमा दिए।

दुकानदार ने एक बड़े पीपे में से दो रुपये का सरसों का तेल नापा और फिर वह उसे गिलास में उड़ेलने लगा। गिलास जल्दी ही पूरा भर गया।

''भाई, इस गिलास में तो बस डेढ़ रुपये का तेल ही आएगा'', उसने शेख से कहा। मैं बाकी तेल का क्या करूँ? क्या तुम्हारे पास और कोई बर्तन है, या फिर मैं तुम्हें आठ आने वापस लौटा दूँ?''

शेख दुविधा में पड़ गया। उसकी अम्मी ने उसे न तो दूसरा गिलास दिया था और न ही पैसे वापिस लाने को कहा था। वह अब क्या करे? तभी उसे एक तरकीब समझ में आई! गिलास में नीचे एक गड्ढा– यानी छोटी–सी कटोरी जैसी जगह थी। बाकी तेल उसमें आसानी से समा जाएगा!

उसने खुशी–खुशी तेल से भरे गिलास को उल्टा किया। सारा तेल बह गया। फिर उसने गिलास के पेंदे में बनी छोटी कटोरी की ओर इशारा किया। ''बाकी तेल यहाँ डाल दो,''उसने कहा।

लाला बेनीराम को शेख की बेवकूफ़ी पर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने सिर हिलाते हुए शेख की आज्ञा का पालन किया। शेख ने गिलास को सावधानी से उठाया और फिर वह घर की ओर चला। लोग शेख की मूर्खता पर हँस रहे थे। पर शेख पर उनका कोई असर नहीं पड़ा।

जब वह घर पहुँचा तब उसकी माँ कपड़े धो रही थी। ''बाकी तेल कहाँ है?'' माँ ने गिलास के पेंदे की छोटी कटोरी में रखे तेल को देखकर पूछा।

''यहाँ'', शेख ने गिलास को सीधा करने की कोशिश की। ऐसा करते समय बचा–खुचा तेल भी बह गया।

''बाकी तेल यहाँ था, अम्मीजान, मैं सच कह रहा हूँ। मैंने लाला जी को तेल इसमें डालते हुए देखा था। वह कहाँ चला गया?''

''ज़मीन के अंदर! तुम्हारी बेवकूफी के साथ–साथ!'' उसकी माँ ने गुस्से में कहा। ''क्या तुम्हारी बेवकूफी का कोई अंत भी है?''

शेख गर्दन झुकाए सब सुन रहा था। वह बोला, ''मैंने बिल्कुल वही किया जो आपने मुझसे करने को कहा था। आपने मुझसे इस गिलास में दो रुपये का तेल लाने को कहा था और वही मैंने किया। गिलास छोटा होने पर मुझे क्या करना है, यह आपने मुझे बताया ही नहीं था और अब आप मुझ पर नाराज़ हो रही हैं। आप गुस्सा न करें अम्मी। जब आप गुस्से में होती हैं तब आप.....''

''अगर तुम मेरे सामने से तुरंत दफा नहीं हुए तो मैं तुम्हारे चेहरे को खूबसूरत बना दूँगी–'' अम्मी ने पास पड़ी झाड़ू उठाते हुए कहा, '' मैं तुम्हारी बेवकूफियाँ कब तक सहन करती रहूँगी ?''

शेख ने अपनी पतंग लपककर ली और छत पर चढ़ गया। माँ दुखी होकर दुबारा कपड़े धोने में लग गईं। उन्हें अब तेल लाने के लिए खुद बनिए की दुकान पर जाना पड़ेगा, फिर भी उनका मानना था कि मेरा बेटा बहुत ही आज्ञाकारी और प्यारा है।

तभी किसी ने बाहर से दरवाज़ा खटखटाया। लाला बेनीराम का छोटा लड़का तेल की बोतल लिए खड़ा था। ''बुआ जी, यह तेल लाया हूँ,'' उसने कहा। "जब शेख भैया ने तेल से भरे गिलास को उल्टा, तो किस्मत से तेल वापस पीपे में जा गिरा। भैया कहाँ हैं? उन्होंने मुझे पतंग उड़ाना सिखाने का वायदा किया था।"

''वह ऊपर है। बेटा, तुम छत पर चले जाओ,'' शेख की माँ ने तेल ले लिया और उस छोटे लड़के के गाल को थपथपाया। फिर वह मुस्कुराती हुई दुबारा अपने काम में जुट गईं।

शब्दार्थ

पतंगबाजी	–	पतंग उड़ाना	इकलौता	–	अकेला
फिक्र	–	चिन्ता	दफा हो जाना	–	चले जाना
फटाफट	–	जल्दी, तुरंत	आसान	–	सरल

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. शेख की अम्मी ने उसे किस काम के लिए बाजार भेजा था ?

प्र.2. तेल का गिलास भर जाने पर दुकानदार ने शेख से क्या कहा ?

प्र.3. माँ के नाराज होने पर शेख क्या कहता था ?

प्र.4. सरसों का तेल लेकर शेख किस प्रकार घर आया ?

प्र.5 यदि तुम तेल लेने जाते तो बचा हुआ तेल कैसे लाते ?

प्र.6. दुकानदार ने तेल लौटाकर ठीक किया या गलत। कारण बताते हुए उत्तर लिखो।

प्र.7. यदि शेखचिल्ली बचे इस तेल को लेने के लिए गिलास नहीं पलटता तो तेल को घर कैसे और किसमें लेकर जाता ?

प्र.8. तुम घर में किन – किन तेलों का किस किस – किस कार्य के लिए उपयोग करते हो –

खाना पकाने के लिए	सरसों , तिल का तेल, फल्ली का तेल, सोया का तेल
हाथ, पैर, सिर में लगाने के लिए	
चूल्हा जलाने के लिए	
मोटर, बस, चलाने के लिए	
दिया जलाने के लिए	

प्र.9. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

1. फटाफट का अर्थ है –

अ. फटा हुआ ब. जल्दी स. पटाखे की आवाज

2. तेल को मापते हैं –

अ. दर्जन में ब. लीटर में स. मीटर में

3. "चिंता" शब्द का सही अर्थ है –

अ. मजा ब. गुस्सा स. फिक्र

4. "नाराज होना" का सही अर्थ है –

अ. हँसना ब. गुस्सा होना स. नाचना

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

रचना

नीचे दी गई शब्द पहेली में जंगल से संबंधित छूटे हुए वर्णों को भरो। वर्णों की तलाश के लिए तुम शब्द–संकेतों का उपयोग कर सकते हो।

शब्द–संकेत

हाथी
शेर
मोर
बरगद
अजगर
तोता
मैना
गीदड़
हिरन
खरगोश

शब्द पहेली

1 ब			द	■	2 तो	
■	3	थी	■	4 हि		न
5 ख			श	■	6	र
■	7	र	■	8 गी		ड़
9 अ		ग		■	10 मै	

योग्यता विस्तार

- तेल हमें किराने की दुकान पर मिलता है। नीचे लिखे सामान हमें किन दुकानों पर मिलेंगे –

सामान	कहाँ पर मिलते हैं ?
कॉपियाँ दवाइयाँ कपड़े मोबाइल	

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को बारी–बारी से पढ़ने का अवसर दें।
- बच्चों को पढ़ने में आनेवाली कठिनाइयों को चिह्नित कर दूर करें।
- शेखचिल्ली या लालबुझक्कड़ की कोई कहानी सुनाएँ।
- बच्चों को इसी प्रकार की हास्य की कहानियाँ खोजकर पढ़ने को उत्साहित करें।

436U7T